कलाकृति

2

कला क्या है? :- कला मानव मस्तिष्क की वह क्रिया है, जहाँ वह अपने अनुभवों को किसी निश्चित कला तत्वों एवं सिद्धांतों के आधार पर अभिव्यक्त करता है। कला मनुष्य के हृदय की भावना के विकास का बहुत बड़ा माध्यम है। मनुष्य कला के माध्यम से अनेक प्रकार की भावनाओं की अनुभूति करता है। सौंदर्यबोध, रंगसंयोजन, एकाग्रता, व्यवस्थितता, स्वच्छता आदि गुणों से स्थल एवं सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है। कला का आस्वाद लेने में मनुष्य की आत्मा को आनंद की अनुभूति होती है। छोटी आयु में कला के प्रति रुचि निर्माण हो सके, इस दृष्टि से इस पुस्तिका में कलाकार्य का निरूपण किया है। आचार्य गण अच्छी तरह से इसका उपयोग करें तो बच्चों के विकास में प्रगति हो सकती है।

आचार्यों से निवेदन :- (1) इस पुस्तिका में दिए गए नमूने में सूचनानुसार कार्य करना है। (2) पुस्तिका में कार्य करने से पूर्व दो-तीन बार अन्य कागज/कार्डशीट पर कार्यानुभव करवा लें। अत: इस पुस्तिका के नमूने सुन्दर एवं उत्कृष्ट बनें। (3) पुस्तिका को प्रदर्शनी मे भी रख सकते हैं। (4) इस पुस्तिका को वर्ष भर संभाल कर रखें। (5) इस पुस्तिका में कार्य करवाते समय स्वच्छता, सुघड़ता और सुंदरता का ध्यान रखें।

पोत Texture :- किसी भी वस्तु के धरातल का गुण पोत कहलाता है। किसी भी पोत को देखकर अथवा छूकर महसूस किया जा सकता है। यह दो प्रकार का होता है।
(1) वास्तविक (नैचुरल) (2) बनावटी । **वास्तविक पोत** - अपना स्वयं का आकार लिए होता है जैसे: ताड़ पत्र, पेड़ की छाल, पत्थर, दीवार इत्यादि। **बनावटी पोत**- को कलाकार या शिल्पकार आकार देता है जैसे - कपड़ा, कागज, चित्र इत्यादि।

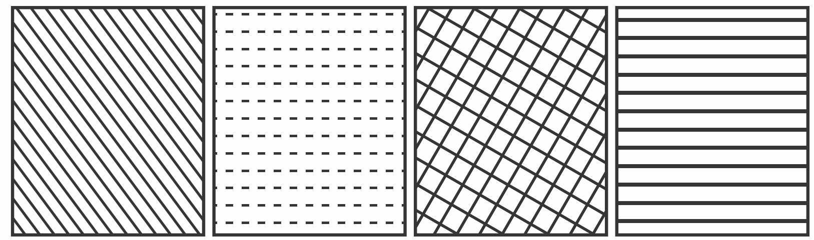

तान Tone :- तान रंगत के हल्के व गहरेपन को कहते हैं। किसी भी रंग में सफेद व काले की मात्रा के अन्तर से अनेक तान प्राप्त होते हैं। तान को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है। 1. छाया (Dark) 2. मध्यम (Middle) 3. प्रकाश (Light) यह विभाजन तान को समझने के लिए है।

प्रवाह (Rythm) :- प्रवाह का अर्थ चित्र-भूमि पर दृष्टि का स्वतन्त्र अबाध एवं मधुर विचरण अथवा गति होता है। प्रवाहयुक्त चित्र में नेत्र को उलझने अथवा कष्टदायक विरोधाभास का सामना नहीं करना पड़ता। यह प्रवाह रेखा, रूप, वर्ण अथवा तान सभी मिलाकर उत्पन्न करते हैं। प्रवाह तीन प्रकार की होती है: (क) सरल-जैसे सरल रेखा के एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक। (ख) कोणीय-कोणकार टूटी रेखा के अनुरूप (ग) लहरदार -सर्पाकार

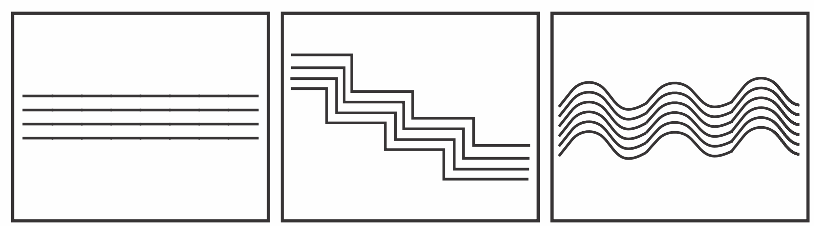

(क) सरल (ख) कोणीय (ग) लहरदार

रंग (Colour) :- प्रकाश के गुण को रंग कहते हैं। रंग दो प्रकार के होते हैं। (1) प्रथम रंग **(Primary Colour):** जिन रंगों का अपना अस्तित्व होता है व किसी रंग को मिलाने से न बनते हों - प्रथम रंग कहलाता है। जैसे-लाल, पीला, नीला। (2) (द्वितीय) रंग **(Secondary Colours) :** प्रथम रंग को मिलने से जो रंग बनते हैं व जिनका अपना अस्तित्व नहीं होता यह द्वितीय रंग कहलाता है। जैसे: लाल + पीला = नारंगी, पीला + नीला = हरा, नीला + लाल = बैंगनी।

COCK AND CHICKS

मुर्गा और चूज़े

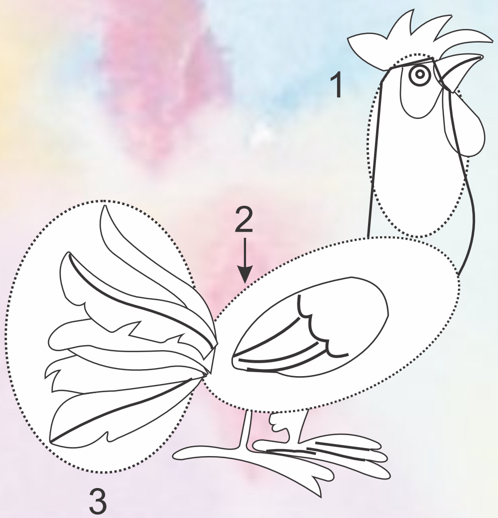

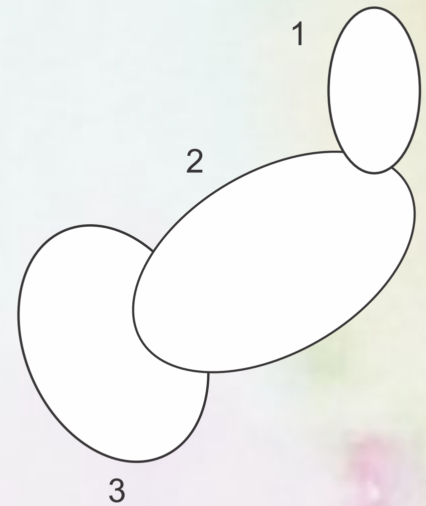

मुर्गा परिवार में रंग भरो।/Fill colours in cock family

Date....................................

Teacher's Signature....................................

FANCY BOOK -MARKS

बुक–मार्क

चित्र को देख कर पुराने बधाई पत्रों से बुक–मार्क तैयार कर के चिपकाएं।

Prepare and paste book-marks using old greeting cards as shown in the picture

Date.......................................

Teacher's Signature.......................................

COLOURING POSTER

मेरा भारत महान

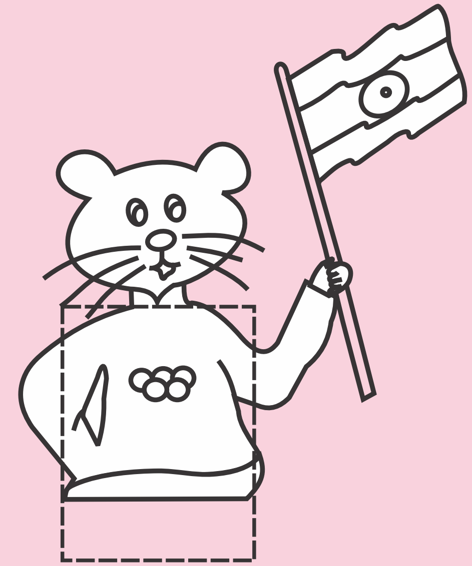

मेरा भारत महान

रंग भरें /Fill Colours

Date......................................

Teacher's Signature......................................

FACE EXPRESSIONS

हाव–भाव दर्शाते चेहरे

इन भंगियाओं में रंग भरो।

Colour the expressions

Date.......................................

Teacher's Signature.......................................

SPORTS MATERIAL